Patrika (Indore), 22nd September 2026, Page - 02

#IITINDORE

307 पेटेंट के बाद कमर्शियलाइजेशन पर जोर, 151 को मिली मंजूरी, 8 का लाइसेंस

लैब से बाजार तक पहुंचेगी तकनीक, स्टार्टअप बनेंगे अगला पड़ाव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. आइआइटी इंदौर में विकसित होने वाली तकनीकें अब लैब, रिसर्च पेपर और पेटेंट तक सीमित नहीं रहेंगी। संस्थान ने शोध को व्यावसायिक उपयोग तक पहुंचाने और तकनीकों के कमर्शियलाइजेशन पर फोकस बढ़ाया है। संस्थान में अब तक 307 पेटेंट दाखिल किए जा चुके हैं, जिनमें से 151 को मंजूरी मिल चुकी है, वहीं 8 तकनीकों का लाइसेंस उद्योगों को दिया जा चुका है, जबकि 20 तकनीकों को स्टार्टअप अपना चुके हैं। यानी, अब शोध का अगला पड़ाव बाजार और उद्योग



बनने लगा है।

स्वास्थ्य, अंतरिक्ष, निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स, पर्यावरण सहित कई क्षेत्रों में ऐसी तकनीकें विकसित की हैं, जिनका व्यावहारिक इस्तेमाल किया जा सकता है। संस्थान के आंकड़ों के अनुसार यहां के शोधकर्ताओं के नाम 11,199 रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं, वहीं 927 शोधकर्ता और फैकल्टी रिसर्च गतिविधियों से जुड़े हैं।

पुलों की सुरक्षा से मेडिकल उपकरण तक

संस्थान की तकनीकों में ड्रोन आधारित क्रैक डिटेक्शन सिस्टम प्रमुख है। यह ड्रोन की मदद से पुलों और इमारतों में दरारों की पहचान कर सकता है। इससे बड़े ढांचों की निगरानी और सुरक्षा व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने में मदद मिल सकती है। इसी तरह माइक्रो-3डी प्रिंटिंग तकनीक से बेहद छोटे और सटीक उपकरण तैयार किए जा सकते हैं। इसके मेडिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और रक्षा क्षेत्र में उपयोग की संभावनाएं हैं।

कैंसर इलाज और पर्यावरण में भी उपयोग

एल-एस्पेरेजिनेज तकनीक का उपयोग ब्लड कैंसर यानी एक्यूट लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के इलाज में इस्तेमाल होने वाले एंजाइम को बेहतर बनाने के लिए किया गया है, वहीं बायोडिग्रेडेबल नैनोपार्टिकल्स जैव-अनुकूल चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं। पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए एआइ आधारित तकनीकों पर भी काम किया जा रहा है। इनके जरिए औद्योगिक प्रदूषण की रियल टाइम निगरानी के साथ प्रदूषण स्तर का पहले से अनुमान लगाने की दिशा में काम हो रहा है। इससे उद्योगों को उत्सर्जन नियंत्रण और पर्यावरणीय मानकों के पालन में मदद मिल सकती है।

अंतरिक्ष से इलेक्ट्रॉनिक्स तक

आइआइटी इंदौर की कुछ तकनीकें अंतरिक्ष और निर्माण क्षेत्र से भी जुड़ी हैं। शॉर्ट यूनिट तकनीक अंतरिक्ष यान के हार्डवेयर के संचालन और परीक्षण से संबंधित प्रणाली से जुड़ी है, वहीं एमएमसीएफ मेटल आधारित फिल्म जैसी तकनीक इलेक्ट्रॉनिक्स और ऊर्जा क्षेत्र में उपयोग की संभावनाएं रखती है। पेटेंट की संख्या बढ़ाने के साथ अब संस्थान का जोर इन तकनीकों को उद्योग और स्टार्टअप तक पहुंचाने पर है, ताकि शोध का लाभ प्रयोगशाला से निकलकर वास्तविक दुनिया की जरूरतों और बाजार तक पहुंच सके।